जयशंकर प्रसाद: प्रमुख छायावादी कवि

बी. ए. हिन्दी प्रतिष्ठा, द्वितीय वर्ष, पत्र-3

डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर

जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई. में हुआ। इनकी आरंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं। 'चित्राधार' काव्य-संग्रह में इनकी ब्रजभाषा की कविताएँ संग्रहित हैं। इनकी खड़ीबोली की प्रारंभिक रचनाओं में छायावादी प्रवृति के दर्शन नहीं होते हैं। सन 1918 में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'झरना' इनकी साहित्यिक यात्रा का अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है। इसमें चौबीस कविताएँ संकलित हैं। इसी संग्रह की कविताओं के आधार पर जयशंकर प्रसाद को एक विशेष पहचान मिली क्योंकि इस संग्रह की कविताओं में आत्मानुभूति, सूक्ष्मता, वायवीयता इत्यादि छायावादी प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ी। सन 1927 में 'झरना' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। इसमें कुल इकत्तीस कविताएँ हैं। इस संस्करण में प्रसाद जी की कविताएँ अधिक प्रांजल रूप प्राप्त कर चुकी हैं और वे एक प्रौढ़ कवि के रूप में स्थापित हो चुके हैं। इस संस्करण में उन्होंने अपनी काव्यकला को अत्यधिक परिष्कृत रूप दिया है। इस संस्करण की कविताओं में आत्मव्यंजना, चित्रविधान, रहस्यमयता, प्रेमानुभूति, इत्यादि छायावादी प्रवृत्तियाँ और अधिक स्पष्टता से उभरकर सामने आई हैं। कवि जयशंकर प्रसाद का काव्य-संग्रह 'आँसू' 1931 में प्रकाशित हुआ। इस काव्य-संग्रह के साथ इनकी साहित्यिक यात्रा और अधिक ऊँचे मुकाम पर पहुँची। इस कृति में छायावादी प्रवृत्तियाँ भी अत्यधिक प्रौढ़ रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित हुईं। 'लहर' और 'कामायनी' तक आते-आते इनकी साहित्यिक यात्रा चरम उत्कर्ष तक पहुँचती है। 'झरना' काव्य-संग्रह की 'किरण' 'विषाद' 'बालु की बेला' आदि कविताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कवि प्रसाद का 1931 में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'आँसू' वास्तव में इनकी साहित्यिक यात्रा को छायावादी काव्य की दृष्टि से विशेष ऊँचाई प्रदान करता है। 'आँसू' काव्य-संग्रह का प्रमुख विषय है- प्रेम।

'आँसू' की कविताओं में कवि का व्यक्तिवाद स्पष्टता से प्रकट हुआ है। इस संग्रह में कवि अपनी समस्त हृदयानुभूति को कोमल शब्दों के साथ अत्यंत सहजता से कविताओं में उड़ेलते दिखाई देते हैं। उनकी वेदना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है कि वह सबकी वेदना से जुड़ गई है-

"जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छाई।

दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।।"

आत्मानुभूति छायावाद की एक प्रमुख विशेषता है, और 'आँसू' में कवि आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति खुलकर करते हैं। निजी जीवन को काव्य का उपजीव्य बनाकर कवि अपनी वेदना को सबकी वेदना से एकाकार कर देते हैं। कवि अपने दुखों को जिस तन्मयता से सुखद स्मृतियों में पिरोकर अभिव्यक्ति देते हैं, वह अत्यंत मनोहारी बन पड़ा है। दुख की अभिव्यक्ति के क्रम में कवि कहीं भी कमजोर पड़ते दिखाई नहीं देते बल्कि उनकी वेदना स्वयं उनके लिए और सबके लिए जैसे प्रेरणा बनकर उभरती है। सौन्दर्य का चित्रण, भाषा का सुकोमल-सुकुमार रूप, भावों और अनुभूतियों का जीवंत चित्रण छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं, इन सभी प्रवृत्तियों का सघन और जीवंत चित्रण 'आँसू' में हुआ है। 'लहर' काव्य-संग्रह में कवि ने अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों ही प्रवृत्तियों को पूर्ण रूप से विकसित होने दिया है। एक कवि के रूप में अपनी हर कृति के साथ प्रसाद कुछ अधिक ऊँचाई प्राप्त करते हुए दिखाई पड़ते हैं। 'लहर' में कवि का सशक्त प्रौढ़ रूप सामने आया है। यहाँ प्रसाद आत्मचिंतक तथा विद्रोही कवि के रूप में सामने आए हैं। 'लहर' संग्रह की कविताओं में विषय-वैविध्य एक बहुत बड़ी विशेषता है। प्रेम, प्रकृति, देश-प्रेम, आत्मानुभूति, एवं आत्मकथ्य इत्यादि विषय प्रमुखता से चित्रित हुए हैं। देश-प्रेम एवं इतिहास से संबंधित कविताएँ इस संग्रह को और अधिक विशिष्टता प्रदान करती है।

ऐतिहासिक आख्यानों में 'अशोक की चिंता' 'शेर सिंह का अस्त्र समर्पण' 'पेशोला की प्रतिध्वनि' आदि कविताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रसाद की काव्य-कला का सर्वोच्च रूप 'कामायनी' में प्राप्त होता है। प्राचीन कथा को कवि प्रसाद ने अपनी कल्पना से सजाकर उसे अत्यंत सार्थक स्वरूप में ढाल दिया है। विद्वानों ने इसे छायावाद युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कहा है।

व्यक्तिवादी काव्य की चरम परिणति 'कामायनी' में देखने को मिलती है। मनु, श्रद्धा तथा इड़ा की कथा के माध्यम से कवि ने मानव के बौद्धिक एवं भावात्मक विकास को जीवंत रूप प्रदान किया है। मनु, श्रद्धा तथा इड़ा जैसे पौराणिक पात्र यहाँ प्रतीकात्मक रूप में आए हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से कवि ने जीवन में संतुलन स्थापित करने का संदेश दिया है-

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।

एक दूसरे से न मिल सके, यह विडंबना है जीवन की।।"

कामायनी का उद्देश्य लोकमंगल एवं आदर्श की स्थापना है। आधुनिक युग का यह महाकाव्य प्रसाद जी को मनवतावादी कवि के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित करता है। छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक कवि जयशंकर प्रसाद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने

कथा-साहित्य, नाटक, काव्य इत्यादि विधाओं में विशद लेखन-कार्य किया है। उनका काव्य भाव पक्ष व शिल्प पक्ष दोनों ही रूपों से उत्कृष्ट काव्य ठहरता है। काव्य के क्षेत्र में निश्चित रूप से उनकी कीर्ति का मूलाधार 'कामायनी' है। इसे विद्वानों ने खड़ीबोली का अद्वितीय महाकाव्य स्वीकार किया है। उनके नाटकों में गीतों की योजना भी उनके काव्य-कला का अन्यतम उदाहरण है। इन गीतों को नाटक के अंतर्गत तथा स्वतंत्र रूप में आज भी पढ़ा और गाया जाता है। निस्संदेह जयशंकर प्रसाद छायावाद के श्रेष्ठ कवि ठहरते हैं और उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।